Parihar Vansa prakash

पड़िहारवंशप्रकाश

अर्थात्

पड़िहार राजपूतों के भूत और वर्तमान सभी राज्यों

का सविस्तर वृत्तान्त

जिस को

जोधपुर राज के मुनसिफ

मुंशी देवी प्रसाद

ने

अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों से संग्रह करके लिखा।

18

5

खड्गविलास प्रेस—बांकीपुर।

बाबू चण्डीप्रसाद सिंह ने छापकर प्रकाशित किया।

१९११

प्रथमवार ८००] [दाम ॥=) आना।

पड़िहारवंशप्रकाश

अर्थात्

पड़िहार राजपूतों के भूत और वर्तमान सभी राज्यों

का सविस्तर वृत्तान्त

जिस को

जोधपुर राज के मुनसिफ

मुंशी देवी प्रसाद

ने

अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों से संग्रह करके लिखा।

खड्गविलास प्रेस—बांकीपुर।

बाबू चण्डीप्रसाद सिंह ने छापकर प्रकाशित किया।

१९११

प्रथमबार] [दाम ॥=) आना।

प्रतिहार वंश प्रकाश।

प्रतिहार वंश प्रकाश।

मुसलमानों का राज होने से पहिले हिन्दुस्तान में प्रायः सबही जगह राजपूतों का राज था। परन्तु बड़े खेद की बात है कि उन के समय का कोई पूरा शृंखलाबद्ध इतिहास नहीं मिलता। इतिहास के नाम से जो कहीं २ कुछ टुकड़े किसी वंश वर्णन या वीर वृत्तांत के मिलते भी हैं तो वे ऐसे खंडित अधूरे और अनमिल होते हैं कि उन के जोड़ने से कोई पूरा इतिहास नहीं बन सकता।

मैं ने इतिहास की रुचि से अपना बहुत सा रुपया और समय लगा कर अनेक ग्रंथ राजपूतों की वंशावलियों, ख्यातों, दंत कथाओं, कविताओं, गीतों और बातों के संग्रह किये हैं और कर रहा हूं परन्तु यह सामग्री बहुत सारी इकट्ठी हो जाने पर भी अभी इतनी पूरी नहीं है कि उस से एक पूरा ग्रन्थ ऊपर लिखे लक्षण का बन सके जिस में इतिहास के सब अंग आजावें। इसी अभाव से अब यह बात उचित समझी गई है कि इस सामग्री से जितना २ कुछ बन सके उतना २ ही इतिहास एक एक राजपूत जाति का बना कर इतिहास प्रेमियों के अर्पण कर दिया जावे जो बहुत दिनों से उस के जानने की लालसा में व्याकुल हो रहे हैं जिन का अनुमान उन के पत्रों से जो नित्यही आया करते हैं भली भांति हो सकता है इस के सिवाय दूसरा अभिप्राय हमारा यह भी है कि यह खंड इतिहास चाहे कैसे अधूरे और अनमिल हों जब घर से निकल कर बाहर की हवा खावेंगे तो विद्वान इतिहास वेत्ताओं के हाथों पड़कर सुधर भी जायेंगे और उन्नति भी पावेंगे। फ़ारसी इतिहासों के एक बड़े ज्ञाता ने कहा है कि इतिहास का भंडार

पृथ्वी में बिखरा पड़ा है कुछ हम ने जोड़ा है और कुछ और लोग भी जोड़ेंगे हम को अपना जोड़ा हुआ खजाना छिपाना नहीं चाहिये ।

इसी विचार से हम यह छोटा और अधूरा सा ग्रन्थ पड़िहार (प्रतिहार) जाति के राजपूतों का प्रकाशित करते हैं यह तैयार तो ३ वर्ष पहिले हो गया था परन्तु इतने समय तक इस झमेले से पड़ा रहा कि कभी तो नागोद राज्य से इस के छपा देने का संदेशा आया और कभी मझहाजनी से यह बात उठी । और ये दोनों राज्य पड़िहारों के हैं इस से उन का कर्तव्य था जो इस को छपा देते या छपा देने के वास्ते कुछ सहायता करते परन्तु कुछ न हुआ सिवाय में यह उलटा फल मिला कि इस की एक शुद्ध की हुई प्रति ही नागोद में स्मृति की गोद से गिर कर न जाने किस विस्मृति सागर में बह गई । परमेश्वर खड्गविलास प्रेस के मालिक बाबू रामरणविजय सिंह का भला करें कि उन के उत्साह और बाबू गोकर्ण सिंह के साहस से जो राजपूत मात्र के इतिहास की उन्नति में लगे रहते हैं मैं फिर यह दूसरी प्रति श्रम कर के तैयार कर सका और उन की सेवा में भेजने के योग्य हुआ आशा है कि अब देश हितैषी और विशेष कर के राजपूत जाति के हिताभिलाषी बाबू साहिबों के प्रयत्न से शीघ्रही छप कर इतिहास प्रेमियों की सेवा में उपस्थित होगा ।

पड़िहार जिन का यह थोड़ा सा वृत्तान्त है अब तो बहुत ही कम रह गये हैं परन्तु एक समय मारवाड़, सिंध, मालवा, अन्तरवेद, मध्य-भारत और बुंदेल खंड में राज करते थे । इसी से हम ने इस ग्रन्थ को २ विभागों में विभक्त किया है ।

पहिले में मुख्य तो मंडोवर के राजाओं के वृत्तान्त हैं परन्तु उस के पेटे में सिंध आदि के पड़िहारों का भी कुछ परिचय आ गया है इस के भी दो खंड हैं ।

पहिले खंड में ग्रन्थों के आधार पर वृत्तांत लिखे गये हैं दूसरे खंड में इदां शाखा के एक ज्ञाता राजपूत के लिखाये हुवे कई उपयोगी वृत्तांत हैं।

दूसरे भाग में राजपूताने के पूर्व प्रान्तों गवालियर वगेरह के पड़िहारों का वर्णन है।

अब हम कृतज्ञता पूर्वक कुछ परिचय उन ग्रन्थों का भी देते हैं कि जिन में से पड़िहारों के वृत्तांत चुने गये हैं।

हिन्दी ग्रन्थ।

१ पृथ्वीराज रासा–इसे चौहान राजपूतों के भाटों ने बनाया है। कहा तो यों जाता है कि चंद भाट ने बनाया है और इस में नाम भी चंद काही आता है परन्तु कविता तथा कविता की भाषा की विभिन्नता तथा वृत्तान्तों और साल संवतों के इतिहास सिद्ध न होने से पुरातत्व वेत्ताओं की समझ में बहुत पीछे का बना हुआ जाना और माना जाता है।

२ पृथ्वीराज चरित्र–यह पृथ्वीराज रासे का सारांश ऐतिहासिक निर्णय सहित उदयपुर निवासी बाबू रामनारायण जी दूगड ने संवत् १९५७ में लिखा है और ऐतिहासिक घटनाओं के निर्णय करने में पंडित गौरीशंकर जी के समान बहुत परिश्रम उठाया है।

३ रासोसार—दो चार वर्ष पहिले नागरी प्रचारिणी सभा की आज्ञा से कुंवर कन्हैया जू ने सरलभाषा में लिखा है। और सभा की ओर से रासे के साथ छप रहा है।

४ वंशभास्कर—यह भी चौहानों और विशेष कर के उन के प्रसिद्ध वंशज हाडाओं की वंशावली का ग्रंथ है। इसे बूंदी दरबार में चारण कवि सूरजमल ने अपनी काव्यशक्ति प्रकट करने के लिये मागधी

पैशाची प्राकृत आदि षट् भाषाओं और नाना प्रकार के छंदों में अब से ५० । ६० वर्ष पहिले रचा है ।

५ वंश प्रकाश—वृहत ग्रंथ वंशभास्कर में से उसी राज्य के प्रसिद्ध विद्वान पं० गंगा सहाय जी ने चौहानों की पीढ़ियों और हाडा राजाओं के इतिहास का सारांश हिंदी भाषा में लिखं कर छपवा दिया है ।

६ भाषा वंश भास्कर—इस विशाल चम्पू काव्य का यह हिंदी उलथा मैं ने कराया है पर अभी नहीं छपा है छप जाय तो हिंदी के भंडार में इतिहास रत्नों की बहुत कुछ वृद्धि हो जाय ।

७ मूतानेणसी की ख्यात—मारवाड़ी भाषा में जोधपुर के बड़े महाराजा जसवंत सिंह जी के देस दीवान मूता नेणसी ने संवत् १७२५ में बनाई है इस में अनेक राजपूत जातियों का इतिहास है ।

७ राजप्रशस्ति—रण छोड़ भट्ट की बनाई हुई एक छोटी सी संस्कृत पोथी मेवाड़ के महाराणाओं के इतिहास की है जो संवत् १७३७ में राज समुद्र की पाज के २४ । २५ पत्थरों पर खुदाई गई थी ।

८ बीर बिनोद—उन्हीं महाराणाओं के इतिहास का एक अद्भुत और वृहत् ग्रंथ महामहोपाध्याय कविराजा सांवल दास जी का बनाया हुआ है, जो काल की विचित्र गति से मुद्रित हो कर भी अलोप हो गया है ।

९ बीर बिनोद का सारांस—वा मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास—राजपूताने के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता विद्वदवर पंडित गौरीशंकर जी ने संक्षेप रूप से किया है ।

१० टॉडराजस्थान—करनेल टॉड का बनाया हुआ एक बड़ा इतिहास राजपूत जाति का अंग्रेजी भाषा में है जिस के दो उर्दू अनुवाद तो लखनउ और लाहोर में छप चुके और दोही हिन्दी में भी हुए हैं । एक तो बम्बई के सुविख्यात प्रेस श्री वेंकटेश्वर में छप रहा है और दूसरा

पंडित गौरीशंकर जी की सराहनीय टीका सहित बांकीपुर के प्रसिद्ध प्रेस खड्गविलास में छपता है।

११ माधवविलास प्रकाश—शेखावत जाति के कछवाहा राजपूतों की इतिहास बखशी झूथालाल कायस्थ ने संवत् १८५८ में बनाया इस में और जाति के राजपूत राजाओं का भी कुछ २ इतिहास है। अभी नहीं छपा है।

१२ जेसलमेर की ख्यात-महता अजीत सिंह ने संवत् १९२१ में गद्य और पद्यात्मक बनाई छपी नहीं है जैसलमेर की भाषा में है।

१३ जेसलमेर की तवारीख-दीवान नथमल ने हिन्दी में बनाई और सन् १८७० ई० में छपवा भी दी है दूसरे रजवाड़ों का भी कुछ २ हाल है।

फारसी तवारीखें।

१ तबकात नासिरी—काजी मिनहाज ने सन् ६५८ हीजरी संवत् १३१७ में बनाई इस में दिल्ली के बादशाहों का हाल शहाबुद्दीन गोरी से नासिरुद्दीन महमूद तक है।

२ तवारीख फ़िरोज़शाही-ज़ियाय बनरनी ने नासिरुद्दीन महमूद से फ़िरोज शाह तुगलक के समय तक का हाल लिख कर यह तवारीख संवत् १४१५ में पूरी की है।

३ आईन अकबरी—शेख अबुलफज्ल ने अकबर बादशाह के राज्य में बनाई है। भारतवर्ष की हरेक प्राचीन बात जानने के लिये फारसी भाषा में बहुत बढ़िया किताब है।

४ तवारीख फरिशता—मोहम्मद कासिम ने अकबर बादशाह के समय तक दिल्ली, दक्खन, गुजरात, मालवा, और कश्मीर वगेरे के बादशाहों का हाल लिखा है, हिन्दुस्तान के मुसलमान बादशाहों का हाल जानने के लिये यह तवारीख बहुत उपयोगी है।

उर्दू तवारीख।

१ तवारीख मालवा—मुनशी करीमुद्दीन मीर मुनशी रजीडंसी इंदोर ने सन् १२८६ संवत् १६२८ में बनाई सेन्ट्रल इंडिया (मध्य भारत) में जितने रजवाड़े हैं उन सब का और दक्षिण के मरेठा महाराजाओं तथा पूना के पेशवाओं और राजपूताने के राजाओं का वृत्तांत इस में है। अच्छी तवारीख है।

२ तवारीख बुंदेलखंड—बुंदेलखंड अजंटी के मीर मुनशी पंडित श्यामलाल ने सन् १८७४ ईसवी संवत् १६३१ में बनाई उस देश के रजवाड़ों का इतिहास इस में सविस्तर लिखा है यह भी बड़े काम की तवारीख है।

३ गुलदस्ते कन्नौज—कन्नौज का संक्षिप्त इतिहास मुनशी किशोरी लाल गौड कायस्थ ने संवत् १८६६ में लिखा है।

४ सहीफ़े ज़र्रीन—नवलकिशोर प्रेस के मालिक बाबू प्रयागनरायन जी भार्गव ने सन् १९०१ ई० में बनाकर छाप दिया है इस में उन सब राजा महाराजा सरदार ठाकुर, पंडित मोलवी मुनशी नवाब वगेरे का संक्षिप्त ऐतिहासिक वर्णन फोटो सहित है जिन को गवर्नमेंट से तमगे और ख़िताब मिले हैं। अच्छा संग्रह है।

५ क्षत्रीकुल थंभन—गांव भटोली तहसील दाता गंज जिले बदाऊं के ठाकुर दल थंभन सिंह ने संवत् १९५८ में बनाया इस में बहुधा राजपूतों के ऐतिहासिक वृत्तान्त है और विशेष कर के उन के जो गंगा जमना के बीच में रहते हैं।

अंग्रेजी।

१ जी० बी० कीथसाहिब की रिपोर्ट—जो ग्वालियर के किले की इमारतों पर सन् १८८२ इसवी में छपी है। कुछ प्राचीन इतिहास के वास्ते उपयोगी है।

प्रतिहारवंशप्रकाश ।

पहिलाभाग—पहिलाखंड ।

पृथ्वीराजरासे से पड़िहारों की उत्पत्ति ।

पृथ्वीराजरासे में लिखा है कि राक्षस ब्राह्मणों को आबू पहाड़ पर यज्ञ नहीं करने देते थे, तब वंसिष्ट ऋषि ने उन का कष्ट मिटाने के लिये अग्निकुंड बनाकर होम किया, उस में से पड़िहार, सोलंकी और पंवार पैदा हुवे और राक्षसों से लड़े परन्तु उन का पाप नहीं कटा—

तब रिष्य वाचिष्ट, कुंड रोचन रचिता मह ।
धरिय ध्यान जजिहोम, मध्य बंदी सुर सामह ॥
तब प्रगट्यो प्रतिहार, राज तिन ठौर सुधारिय ।
पुनि प्रगट्यो चालुक्य, ब्रह्मचारी ब्रत धारिय ॥
पंवार प्रगट्यो वीरवर, कह्यो रिष्य परमार धन ।
त्रय पुरुष जुद्ध कीनो अतुल, महरष्षस पुट्टंत तन ॥

निदान वशिष्ट ने फिर अग्निकुंड रच कर चौहान को प्रगट किया । उस ने आशपूरा देवी की सहायता से राक्षसों को मार ब्राह्मणों का कष्ट और भय दूर कर दिया ।

मानसी पड़िहार ।

पृथ्वीराजरासे में जहां बीसलदेव चौहान के गुजरात पर चढ़ाई करने का वर्णन है, वहां मानसी

पड़िहार का नाम भी आता है कि उस ने मंडोवर की फौज के साथ बीसला तलाव पर पहुंच कर बीसलदेव के पांव छूए थे।

पृथ्वीराजचरित्र से—नाहरराय और पृथ्वीराज।

पृथ्वीराज के बालपन में दिल्ली पर अनंगपाल तंवर पट्टन में चोलक्य भीमदेव, चीतौड़ पर रावल समरसिंह और आबू पर सलख प्रमार आदि राज करते थे और ये सब बड़े बलवान थे तौ भी मंडोवर का राजा नाहरराय पड़िहार इन सब में अपने ही बल से स्वतंत्र था। नाहर के समान नाहर राय के नाम से बड़े २ वीरों के कलेजे कांपते थे। एक समय पृथ्वीराज की मा कमलारानी अपने बेटे को लेकर बाप के घर दिल्ली में गई थी तब वहां नाहरराय भी था। उस ने पृथ्वीराज के रूपगुण से प्रसन्न होकर उस के साथ अपनी कन्या का संबन्ध करने की बात चीत की थी।

जब पृथ्वीराज जवान हुआ और उस के बाप सोमेश्वर ने नाहरराय से विवाह कर देने को कहलाया तो उस ने जवाब दिया कि हम ने तो वह १ बात कही थी और हमारी बेटी तो किसी ऊंचे घराने में व्याही जावेगी। सोमेश्वर क्रोध से आतुर हो कर तुरंत मंडोवर पर चढ़ गया। पृथ्वी-

राज भी साथ था, उस ने लड़ाई में ऐसी बहादुरी दिखाई कि नाहरराय की फ़ौज भाग निकली और वह पकड़ा गया। निदान उस ने सोमेश्वर का कहना मान कर अपनी बेटी पृथ्वीराज को ब्याह दी॥

रासोसार से—नाहर राव और पृथ्वीराज।

राजा सोमेश्वर जी ने एक अति उत्तम विद्वान दूत को नाना प्रकार से समझा बुझा कर एक पत्र दे कर मंडोवर के परिहार राजा नाहर राय * के पास पृथ्वीराज के ब्याह के लिये भेजा।

एक समय जब कि पृथ्वीराज की अवस्था दो वर्ष की थी और जब अपने ननिहाल में राजा अनंगपाल के पास गये थे तो नाहरराय दिल्ली आये और पृथ्वीराज को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। इन्हों ने एक माला अपने हाथों पृथ्वीराज को पहिनाई और कहा कि जब इन की अवस्था १६ वर्ष की हो जायगी तो मैं अपनी कन्या इन्हें ब्याह दूंगा, इस लिये सोमेश्वर जी ने समय पा कर उक्त दूत भेजा।

किन्तु नाहर राय की इच्छा में कुछ अंतर पड़ गया था। इस लिये जब सोमेश्वर जी का दूत पत्र

* जिस समय का यह वर्णन है उस समय पट्टन में चालुक्य (सोलंकी) भीमदेव, आबू में सलख (जेत) पंवार, मेवाड़ में समर सिंह और मंडोवर में नाहर राय परिहार राज्य करते थे।

ले कर नाहर राय के दरबार में पहुंचा तो उन्हों ने ब्याह करने से साफ २ यह कह कर नाहीं कर दी कि अजमेर के चौहानों का कुल हमारे योग्य नहीं है ब्याह, प्रीति, बैर समान कुल में ही किया जाना चाहिये अतएव मुझे ब्याह करना स्वीकार नहीं है। निदान दूत ने अजमेर आकर सभा में बैठे हुए सोमेश्वर के सम्मुख नाहर राय का पत्र दे कर समस्त वृत्तांत यथा-तथ्य निवेदन कर दिया जिस के सुनते ही पृथ्वीराज की क्रोधाग्नि की असीम ज्वाला भभक उठी। सब सामंतों से भी न रहा गया, और सब की सम्मति यही ठहरी कि नाहर राय पर चढ़ाई कर के उसे जीत कर बलपूर्व्वक ब्याह किया जाय। निदान इसी मत के अनुसार अजमेर के आधीन अन्य राजाओं को सहायता के लिये बुलाया गया। और अपनी चतुरंगिनी सेना सज कर पृथ्वीराज ने निज पिता वीर सोमेश्वर की आज्ञा पा अष्टमी रविवार को मंडोवर पर चढ़ाई करने को कूच किया।

मंडोवर राज्य के गुप्त दूतों ने जो राज्य की ओर से केवल समाचार देने ही के लिये हमेशा इधर उधर घूमा करते हैं आन कर नाहर राय से निवेदन किया कि हे महाराज अजमेर का राजकुमार पृथ्वीराज जो सात दिशाओं को विजय कर चुका,

जिस का उदंड पराक्रम संसार में विदित है अपनी विकट सेना को लिये हुए आप की तरफ आ रहा है। उस की सेना में १००० बलवान कुत्ते शूरवीरों के समान घी, दूध और मांस भोजन करनेवाले हैं, जिस से उस ने शिकार का बहाना किया है। नाहर राय दूत के मुंह से यह वचन सुन कर और पृथ्वीराज का प्रबल प्रताप स्मरण कर के मन में बहुत घबराया और उसी समय अपने समस्त राज्य मंत्री और सेनापतियों को बुलाकर उस ने सब समाचार कह सुनाया और कहा कि यद्यपि प्रथम मुझ में और चौहान में मित्रता थी किंतु अब कुछ औरही बात हो गई है। इसलिये तुम लोग विचार कर कहो कि अब क्या करना चाहिये। राजा की बात सुन कर सब योधाओं ने उत्तर दिया कि गत विषय पर पश्चात्ताप करना व्यर्थ है, यदि पृथ्वीराज हम पर चढ़ाई करने आता है तो हम भी उस से लड़ने को सन्नद्ध हैं और सब की यह सलाह ठहरी कि यदि पृथ्वीराज पट्टन तक आ जायगा तो युद्ध के कारण एक तो प्रजा की बड़ी हानि होगी और दूसरे उस का बल भी बढ़ जायगा इसलिये आगेही चल कर युद्ध छेड़ना उचित है। ऐसा विचार कर नाहरराय भी अपनी सेना सजकर आगे बढ़ा। यह खबर पाकर पृथ्वी-

राज ने अपने जोवनराय नामक एक सामंत को नाहरराय का मुहासरा करने की आज्ञा दी। इस पर जोबनराय ने विनीत भाव से निवेदन किया कि लोहाना आजनबाहु ने पहिलेसेही उस की राह रोक रक्खी थी किन्तु वह उस स्थान को तिरछा देकर भाग गया है। निदान पृथ्वीराज और आगे बढ़ा और जहां से नाहरराय भाग गया था सायंकाल के समय वहां पर जा पहुंचा और नाहरराय की खोज में प्रवृत्त हुआ, एक गुप्त-चर ने आकर समाचार दिया कि नाहरराय तीन हजार घुड़सवार सेना सहित चालुक्य के प्रधान मंत्री के यहां छिपा हुआ है। यह खबर पाकर पृथ्वीराज अपनी चतुरंगिनी सेना सहित नदी पार करके नाहरराय के सिर पर जा पहुंचा। जब नाहरराय को यह खबर लगी कि पृथ्वीराज नदी पार कर चुका है तो उस ने मीना लोगों के पहाड़ी सरदार पर्व्वतराय को बुला कर आज्ञा दी कि तुम घाटी का रास्ता रोक कर पृथ्वीराज से युद्ध करो। निदान बीर पर्व्वतराय भी स्वामि कार्य्य करने अथवा देश रक्षा करने को ही अपना मूल-कर्तव्य मान कर चार हजार धनुषबाण धारी मीना और भील लोगों को लेकर घाटी के तंग रास्ते में आडटा। पर्व्वतराय के रास्ता रोकने की खबर

जब पृथ्वीराज को लगी तो उन्हों ने कन्हराय को पर्व्वतराय का मुकाबिला करने की आज्ञा दी। कन्हराय हुक्म पातेही अपनी छोटी सी सेना लेकर उन कठोर भीलों के समूह पर इस प्रकार से टूटपड़ा। जैसे मतवाले हाथियों पर सिंह टूटें। उधर से तीरों की बौछार ने कन्हकी समस्त सेना को आच्छादित कर लिया किन्तु बीर कन्ह तनिक भी न हटा और पर्व्वतराय से जा भिड़ा बहुत समय तक दोनों में द्वंद्व युद्ध होता रहा। अन्त में कन्हराय ने पर्व्वतराय को मार डाला और भीलों की सेना को भगा दिया। वीर पर्व्वतराय की मृत्यु का संबाद पाकर नाहरराय स्वयं कन्ह पर चढ़ दौड़ा। उधर से पृथ्वीराज भी लोहाना चामुण्डराय इत्यादि योधाओं को लेकर कन्हकी पीठ पर आ पहुंचा और घोर घमासान लोहा झरने लगा। हाथी हाथी से, सवार सवार से, पैदल पैदल से जुट गए। सरदार सरदारों का द्वंद्व युद्ध होने लगा और नाहरराय और पृथ्वीराज का युद्ध छिड़ा। बड़ी देर तक दोनों उस बन प्रांत में सिंह के समान भिड़ते रहे अन्त में पृथ्वीराज जी ने नाहरराय के घोड़े को मार डाला जिस से वह जमीन पर लथा लोट हो गया किन्तु पृथ्वीराज ने उस पर बार नहीं किया। नाहरराय को गिरते देख कर कनक

राय उस का चचेरा भाई पृथ्वीराज जी के साम्हने आया। निदान उस के घोड़े को भी पृथ्वीराज ने दो टूक किया। इस कौतुक से दोनों ओर की सेनाओं में वहुत जोश बढ़ गया और दोनों ओर के बीर योद्धागण कुपित होकर बार करने लगे। वह दो पहाड़ों के बीच की खोह रक्त का समुद्र हो गई। पांच दिन घमसान युद्ध रहा। पांचवें दिन नाहरराय भाग निकला। पृथ्वीराज ने पुनः उस का पीछा करना उचित न जान कर पट्टनपुर पर अपना दखल किया। दशमी के दिन के दिन पृथ्वीराज का पट्टन में राज्याभिषेक हुआ।

नाहरराय लड़ाई से भाग कर अपनीही सीमा के गिरनार नामक एक ग्राम में जा रहा। वहां पर नगर कें सब सभ्य महाजन तथा अन्य मान-नीय कर्म्मचारियों से मंत्र कर के पृथ्वीराजजी को अपनी कन्या ब्याह देना स्वीकार करके प्रोहित द्वारा पृथ्वीराज के पास उस ने टीका (लग्न) भेजा। पृथ्वीराज ने भी उसे प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया और बड़े गाजे बाजे से अपनी सेना को सजकर वह पंचमी रविवार को गिरनार में जा पहुंचा। जिस समय पृथ्वीराज की बारात गिरनार में पहुंची उस समय नाना प्रकार के साज बाज से सुसज्जित वह नगर साक्षात् कैलाश सा

प्रतीत होता था। नगर में प्रवेश करतेही पृथ्वी-
राज ने ग्राम्य देवताओं को दंडवत किया। नाहर
राय ने भी बचीखुची सेना सजकर बारात की
अगंवानी करके बारात को डेरा दिया और बड़े
उत्साह से अपनी कन्या का विवाह पृथ्वीराज के
साथ कर दिया। कन्यादान कर के नाहरराय ने
विनीत भाव से पृथ्वीराजजी से विनय की कि वीर-
वर चहुआन! आप मुझ से सब प्रकार बड़े हैं,
इस लिये मैं कुछ भी नहीं दे सकता केवल यह
कन्या अर्पण करते हुये अपना सिर आप की
चरण सेवा में सदा के लिये अर्पण करता हूं। इस
के उत्तर में पृथ्वीराज ने भी कोमल शब्दों से नाहर
राय का चित्त शांत किया। दोनों श्वसुर दामाद में
क्षण क्षण प्रेम बढ़ने लगा। बड़े उत्साह से दोनों
ओर के प्रधान और साधारण पुरुषों ने मिलकर
आनंद मनाया। दो दिन पीछे पृथ्वीराज नाहरराय
की कन्या जंनावती सहित ११ डोले साथ लेकर सम्हर
को लौट आया।

वंशभास्कर से उत्पत्ति।

एक समय सुरम्य आबू पहाड़ पर महर्षि
वशिष्ट मुनि अग्निकुंड बना कर यज्ञ करते थे।
असभ्य राक्षस यह सोच कर कि ब्राह्मण लोग इस
यज्ञ के द्वारा हमें बध करेंगे, रातों को आ आ कर

उन्हें डराने और सताने लगे। निदान वशिष्ठ जी ने दुखी हो कर ऋषियों के कहने से उन के मारने के लिये अग्निकुंड में से किसी पराक्रमी क्षत्री को उत्पन्न करने का संकल्प किया सो आहुति देते ही गोरे वर्ण का एक तेजस्वी पुरुष तीर कमान लिये हुवे आग में से निकला और वशिष्ठ ऋषि के पावों में सिर रख कर बोला कि मैं अपने बाहु-बल से इस अखंड ब्रह्मांड को पल भर में तोड़ सकता हूं, केवल आप की आज्ञा की देर है।

वशिष्ठ ने प्रसन्न हो कर उत्तर दिया कि हे प्रतिहार! यहां जो बनों में राक्षस रहते हैं वे हम को यज्ञ नहीं करने देते। तुम उन को मार कर, हमारी रक्षा करो। यह सुनतेही वह राक्षसों से लड़ने गया। वशिष्ठ जी ने विचारा कि मैंने इसे कह तो दिया है पर यह काम इस से होना असंभव है क्योंकि अभिमानी पुरुषों से इस लोक और पर-लोक का कोई काम सिद्ध नहीं होता। (जो गरजते हैं, सो बरसते नहीं)।

उधर राक्षस प्रतिहार से हार कर भाग तो गये परन्तु उन का उपद्रव नहीं मिटा। तब वशिष्ठ मुनि ने फिर दो क्षत्रियों अर्थात् सोलंखी और पंवार को पैदा किया। उन्हों ने भी राक्षसों को मारने में बहुत परिश्रम किया, परन्तु उन का पाप

नहीं कटा। अंत में चौहान के उत्पन्न होने से ऋषियों को शांति हुई क्योंकि उस ने दुर्गा देवी के बरदान से सब राक्षसों को मार कर नष्ट कर दिया।

मुनियों ने इन चारों को आशीर्बाद दिया परन्तु अभिमान करने से प्रतिहार पर मुनिराज वशिष्ट जी की कृपा कम रही।

पड़िहारों की वंशावली।

१ प्रतिहार, धन्वदेश (मारवाड़) में बसा ६ कोट का मालिक हुआ।

२ जोधराज इस के ५०० बेटे हुवे जिन में से बड़ा देवराज तो राजा हुआ और ४६६ शिकार में पच्चों से लड़ कर काम आ गये।

३ देवराज, इस के ७ बेटे, सिंह, करन, सल्लू, सल्ल, मिश्रक, छत्रास्व, शत्रुघ्न, इन में बड़ा

४ सिंह, राजा हुआ

५ पंडहर

६ पृथ्वीन

७ जयद्रूम

८ समाधि

६ कुमकर

१० पराबल

११ गुपाल

१२ सत्वराज
१३ भल्लकरग
१४ मखेन
१५ रंजन
१६ प्रहलाद
१७ महीपराज
१८ ध्वजमहीप, इस से मारवाड़ छूट गया तब इस ने बिंलथलनगर (१) में जाकर अपना राज जमाया
१९ त्रिसंगमहीप
२० अत्तयमहीप.
२१ बेणुमहीप इस का बहुत राजबढ़ा इसके ४ बेटे हुवे.
२२ भीममहीप, बीरमहीप, मधुपाल, गर्जमहीप वा मल्लमहीप
२३ स्वर्णमहीप
२४ जसनमहीप
२५ संगमहीप
२६ राममहीप
२७ विश्वमहीप
२८ संग्राममहीप
२९ रचमहीप

(१) बिलथलनगर कहांथा इस का कुछ परिचय नहीं दिया है शायद मारवाड़ में हो क्योंकि थल अर्थात् निर्जलभूमि के प्रांत बहुधा इसी देश में हैं।

३० नगमहीप
३१ रूपमहीप
३२ नंदमहीप
३३ सेनमहीप
३४ गजमहीप
३५ सुभगमहीप
३६ राजमहीप
३७ महामहीप
३८ धनुर्महीप
३९ जयमहीप
४० संकरमहीप
४१ दानमहीप
४२ दयामहीप
४३ अजितमहीप
४४ महीमहीप
४५ प्रभुमहीप
४६ ईश्वरमहीप
४७ हरीमहीप
४८ रनमहीप
४९ मधुमहीप
५० बलमहीप
५१ रतनमहीप
५२ पधमहीप इस के ५ बेटे हुए

५३ लुट्टरमहीप, अचलमहीप, दलमहीप, भगवत महीप, सलमहीप, इन में से बड़ा तो लड़ाई में मारा गया जिस को लुट्टर पितर के नाम से पूजते हैं और अचलमहीप का बेटा बिनय-महीप राजा हुआ।

५४ बिनयमहीप

५५ सहनमहीप

५६ हंसमहीप इस के ३१ बेटे हुवे

५७ मल्ल १ खेमकर २ प्रयार ३ मानव ४ धर्म ५ सुवर्ण ६ प्रनय ७ राजस ८ सुपाल ९ कलि १० कनका ११ सिरोमणि १२ मान १३ चंद्र १४ वर्गल १५ पेम १६ गज १७ गुनयुत १८ पूरन १९ मदन २० बदन २१ चंदन २२ तुंगध्वज २३ अंबर २४ अदर २५ असोक २६ कुंज २७ कटकित २८ हरि २९ सहोत ३० धन्वंतरि ३१।

५८ गोतममहीप

५९ कीर्तिमहीप

६० महमहीप

६१ तेजमहीप

६२ घोरनमहीप

६३ रामराज

६४ ज्ञानराज

६५ बीरराज
६६ सहस्रराज
६७ कनकराज
६८ कुंजराज
६९ वंसराज
७० बेणीराज
७१ चित्रराज
७२ प्रह्वराज
७३ भल्लराज
७४ सुतानराज
७५ बंगस्वराज
७६ कनकराज
७७ कुंसालराज
७८ त्रिलिखराज
७९ अजयराज
८० राजेन्द्रराज
८१ मल्लराज
८२ कृष्णराज
८३ चपनराज
८४ सिंहराज
८५ पल्लहराज
८६ मल्लोकराज
८७ मिलराज

८८ उदयराज

८९ बलराज

९० गहलराज

९१ राधवराज

९२ रामराज

९३ कुबलराज

९४ सक्रराज इस के १५ बेटे हुवे—

९५ बलिराज १ चंद्रराज २ हनुराज ३ निर्भयराज ४ उदयराज ५ जोहिलराज ६ त्रिलोकराज ७ उग्रराज ८ सुखराज ९ राजद्राज १० भोजराज ११ निमिराज १२ जयमदराज १३ अनयराज १४ इन्द्रराज १५

९६ उत्तमराज बलिराज का बेटा

९७ मधुरराज

९८ शक्तिमान

९९ गिरिवरराज

१०० बणीराज

१०१ अलराज इस के २५ बेटे हुए हंसराज १ बच्छ-राज २ सामंतराज ३ हृदयराज ४ हायनराज ५ मोहनराज ६ भ्रवराज ७ महासत्व ८ शत्रुघ्न राज ९ मदनराज १० मंडन राज ११ नल राज १२ संकरराज १३ महानंदराज १४ जयःदेवराज १५ भानुराज १६ कर्पूरराज १७ सुन्दर

राज १८ हरसुमरुराज १६ शिवदसराज २० बाहनराज २१ नारायणराज २२ भासकरराज २३ माधवराज २४ आलराज २५ हंसराज जो बड़ा था लड़ाई में बेऔलाद मारा गयां इसलिये पिंतर के नाम से पूजा जाता है और बच्छराज राजा हुआ।

१०२ बच्छराज, इस के दो बेटे कर्णराज और त्रिलोकचंद्र हुवे।

१०३ कर्णराज इस के ५ बेटे हरिराज १ गिरिराज २ शंभुराज ३ समानराज ४ बिनयराज ५

१०४ हरिराज, इस के भी ५ बेटे हुवे संजमराज १ नगराज २ बलभद्रराज ३ वीर ४ बिक्रमराज ५

१०५ संजयराज, इस के २ बेटे हुए

१०६ अमरराज, राजराज

१०७ सिंहराज

१०८ महनराज

१०९ किसोरराज

११० पूर्णराज

१११ सुजानराज

११२ कुमारराज

११३ सबलराज

११४ सुरराज

११५ परमानंदराज

११६ नंदराज
११७ गोवर्द्धनराज
११८ रामपाल
११९ बुधपाल
१२० धर्मपाल
१२१ चंद्रपाल
१२२ कृष्णपाल
१२३ कर्णपाल—इस के मोहनपाल १ सज्जनपाल २ अमरपाल ३ मानपाल ४ चंदनपाल ५ सुखपाल ६ भारतपाल ७ आनंदपाल ८ धनपाल ९ मंत्रपाल १० सेनपाल ११ सुंदरपाल १२ सुभीमपाल १३ अनंतपाल १४ रुध्रपाल १५ मेघपाल १६ व्रजपाल १७ भानुपाल १८ अमदपाल १९ सब्दलपाल २० दमपाल २१ गोमनपाल २२ अरजुनपाल २३ ।
१२४ मोहनपाल
१२५ नरपाल
१२६ लच्छनपाल
१२७ सामंतपाल
१२८ जयपाल
१२९ हरितपाल
१३० भैरवपाल
१३१ सुभामपाल

१३२ छत्रपात्र

१३३ संगरपाल

१३४ बेणीपाल

१३५ अंनुपमपाल संवत् ३५० में, इस के रानियों से औलाद नहीं हुई तब .सिद्धों का सेवन किया जिन के प्रसाद के चंद्रवती नाम १ बेटी हुई जो मथुरा के जादवराजा अमरचंद को व्यांही गई। उस के जो बेटे हुवे उन्हों ने अपने नाना की पदवी ले ली जब से जादव राजापाल कहलाने लगे और फिर जो अनुपमपाल के बेटा जैसिंह हुआ वह राना कहलाया इस से पड़िहारों में राना की पदवी आई।

१३६ जैसिंहराना

१३७ धनेश्वरराना

१३८ बुधसिंह राना इस के ८ बेटे हुये दीपराना १ उदैराना २ छत्रराना ३ लालराना ४ हरमत राना ५ जगतराना ६ मानराना ७ किसोर-राना ८।

१३९ दीपराना इस के ३ बेटे शंभुराना १ संग्राम राना २ अजगरराना ३।

१४० शंभुराना के ४ बेटे अजराना १ अनूपराना २ गांगेव ३ गधाधर ४।

१४१ अजराना

१४२ कमोदराना

१४३ नगपतिराज इस के १८ बेटे सल्ल १ बल २ हम्मीर ३ बंक ४ चंदन ५ कल्याण ६ तवल ७ सहज ८ सोभाग्य ९ अमर १० परबत ११ रंज १२ गरु १३ लछमन १४ जदुपति १५ भोज १६ चंद्रभानु १७ बल्लहन १८।

१४४ सल्लराना

१४५ अमयराना-२ बेटे भावराना १ रुघुनाथराना २

१४६ भावराना, इस के १०० रानियां थीं जिन से २६ बेटे हुए इन्द्रजित १ अन्नद २ बुद्धिप ३ हर ४ कमल ५ प्रयाग ६ बीरभानु ७ सुभराज ८ संकर ९ कोक १० चंद्र ११ आसाजित १२ बेधक १३ कुंजराज १४ कोपन १५ कमन १६ दिलीप १७ भगीरथ १८ गंगाधर १९ सल २० समुद्र २१ अक्रूर २२ सूर २३ संभु २४ सम्मद २५ हर २६।

१४७ इन्द्रराज-इस ने फिर मरुदेश लेकर अपनी राजधानी बनाई उस के ३ बेटे हुये नियमराज १ माधव २ भीम ३।

१४८ नियमराजराना।

१४९ पुंडरीक इस ने कई बार गया की यात्रा कर के पित्रों का ऋण उतारा इस के ३ बेटे केशव, मघमान और जीवन हुये।

१५० केशवराना
१५१ बुधपाल
१५२ ध्वजपाल
१५३ लोकपाल
१५४ कृपाल
१५५ पूरनपाल
१५६ अमृतपाल
१५७ प्रयागपाल
१५८ समरपाल
१५९ शिवर्तपाल
१६० सेनापत्ति
१६१ काशीनाथ
१६२ करमनपाल
१६३ किसोरपाल
१६४ करनपाल
१६५ कृष्णपाल
१६६ रघुराज
१६७ सल्हराना
१६८ संवरराना
१६९ भूपतिराना
१७० अजराना, इस की रानी जाडेचा जाति की जादवन थी।
१७१ नाहरराज, इस की बहन पंगिला चीतोड़ के

राना तेजसिंह को ब्याही गयी थी। देवयोग से नाहरराज को कोढ़ हो गया। उस वक्त कन्नौज पर राठौड़ जैचंद तपता था, चीतोड़ पर सीसोदिया, समरसिंह * दावल, अनंगपाल तंवर दिल्ली पर, सोमेश्वर चौहान अजमेर पर, भीम सोलंखी गुजरात पर, जिस का खिताब भोलाराय था। जसमहीप कछवाहा नरवर पर, सुलक्ख पंवार आबूगढ़ पर, अनंदराज हाडा बंबावदे पर, जयसेन जादों रणथंभोरगढ़ पर, कलहकरन भाटी जैसलमेर पर, परमालचंदेल महोबे पर, राज करते थे।

नाहर राज एक दिन अकेला घोड़े पर शिकार को गया और एक सूर के पीछे घोड़ा दौड़ाता हुआ बहुत कोस चल कर पुष्कर में जा पहुंचा। पुष्कर काल पड़ने से सूखा हुआ था और वहां ऐरा ऊग रहा था, जिस

---

* सूर्यमल्ल (वंशभास्कर के कर्ता) ने समर सिंह का इस समय में होना पृथ्वीराजरासे के मत से लिखा है सो सत्य नहीं है। क्योंकि पृथ्वीराजरासा उस समय का बनाया हुआ ग्रंथ नहीं है। उस से बहुत पीछे कपोलकल्पित कहानियों से बनाया गया है। इस कारण समर सिंह के समय से १०० वर्ष का अंतर पड़ता है। जिस को प्रमाणों सहित देखना हो तो मिवाड़ के इतिहास "वीरविनोद" नामक ग्रंथ में देखे।

में सूर छुप गया। नाहर राज को प्यास लगी तो एक गाय के खुर में पानी पाया। वही उस ने पिया, उस का कोढ़ मिट गया और वह सुख पा कर वहीं सो गया। पुष्करराज ने उस के स्वप्न में आ कर कहा कि मैं ही सूर बन कर तुझ को यहां लाया हूं, तू मेरा जीर्णोद्धार करा दे। राजा ने जाग कर मंडोवर से अपने अमीरों और दीवानों को बुला लिया और लाखों रुपया खर्च करके पुसकरताल को औंड़ा खुदाया और कनक आदि धातुओं की पेडियां चारों तर्फ़ बनवा दीं। उस दिन से सब पड़िहारों ने सूर खाना छोड़ दिया। ऐसा मंडोवर का राजा नाहरराव हुआ था।

१७२ राघवराज इस के ३ बेटे धनराज, राजसिंह, और सामंतराज हुये।

१७३ धनराज।

१७४ गंगपाल, इस के २ बेटे जीवराज १ सुंदर २

१७५ जीवराज, इस के भी २ बेटे हुये अमायक, और सुदार।

१७६ अमायक, इस के १२ बेटे लुल्लर १ सूर २ राम ३ खीखा ४ सोधक ५ खुकबर ६ चंद ७ मालदेव ८ धार ९ खीर १० डूंगर ११ सुबर १२ इन बारहों से पड़िहारों के १२ भेद हुये जैसे

१ लुन्नर के लुन्नरा
२ सूर के सूरावत जिन को कोई२ भाट मंडोवरा भी कहते हैं।
३ राम के रामटा
४ खीखा के बुधखेल, जिन्हों ने अपनें नाम से, बुधखेलनगर * बसाया।
५ सोधक का बेटा ईंद हुआ उस से ईंदा हुये।
६ खुक्खर के खोखर हुये
७ चंद के ३ बेटे किल्हन, चंद्र, और चुहन्न हुये।
१ किल्हन ने कीलोई गांव बसाया उस के कीलोया पड़िहार हुये।
२ चंद्र के चंद्रायना
३ चुहन्न के चोहन्ना, ये सब चांदाऊंत हैं।
८ मालदेव के महप और महप के धोरान हुआ जिस के वंशवाले सब धोराना कहलाये।
९ धार के धंधिल्ल हुआ उस के कुलवाले धंधिल कहलाते हैं।
१० खीर का बेटा सिंधु—उस से सिंधु पड़िहार हुये।
११ डूंगर के बेटे, डोराना से डोराना हुये।
१२ सुबर के सुबराना
१७७ लुन्नर

* इस नगर का कुछ पता हम को नहीं मिला।

१७८ रुद्रपाल इस के ४ बेटे हरपाल, सेनपाल, मोहनपाल और स्यानपाल हुये।

१७९ हरपाल।

१८०. ठक्कुरपाल।

१८१ इंद्रपाल।

१८२ बुंधपाल।

१८३ पृथ्वीराज।

१८४ रुपाड़—इस के १६ बेटे हम्मीर १ जैसल २ मुकन ३ देवीदास ४ कुंज ५ कल्लू ६ करन ७ देवपाल ८ जसराज ९ जयसिंह १० पित्थ ११ चंद्र १२ चंप १३ उद्दल १४ दीपसी १५ गूजरमल १६।

१८५ हम्मीर —मंडोवर में राजा हुआ, राठौड़बीरमके बेटे चूंडा ईंदों के घर विवाह करके बड़ा लड़ाका हो गया, ईंदे थे तो पड़िहार ही, परन्तु अपने स्वामी (हम्मीर) को विरुद्ध जानकर अपने जमाई के साथ जुड़ गये थे और स्वामी के हृदय के साल बन गये थे। हम्मीर उन दिनों खोटी चाल चलता था, वह अपने ही गोत्र की बहिन का वर* बन गया था जिस से सब भाईबंद बदल गये थे। एक ब्राह्मण गौना करके अपनी औरत को लिये

* अपनी गोत्र की बहन से व्यभिचार करने से—(टीकावंशभास्कर)

जाता था, हम्मीर ने जो देखा कि रूप उस औरत के अंग में नहीं समाता है तो निर्लज्ज ने वह ब्राह्मणी उस से छीन ली। तब ब्राह्मण आग में जल गया। दुष्ट राजा ने यह ब्रह्महत्या कुछ नहीं गिनी इस वेसँन के डर से सब भाईबंद उस को मारना चाहते थे। तब चूंडा राठौड़ ईंदों को लेकर आधी रात में मंडोवर जा पहुंचा। दुष्ट राजा की परगह चूंडा से मिल गई, हम्मीर लड़ा नहीं और भाग गया। संवत १४५१ में मंडोवर का किला राठौड़ों ने ले लिया।

हम्मीर राठौड़ों के बैर को भूल कर बेरू-टंकनपुर में जा बसा, उस के पन्द्रहवें भाई दीप-सिंह के कुल में सोंधिये* हुवे जो मालवे में बसते हैं।

सोलवें भाई गूजरमल ने आग में जले हुवे एक बछड़े को हरन जान कर दीपसिंह के बरजते २ उस के दो कान खा लिये। इतने ही में ग्वालिये ढूंढ़ते २ वहां आ गये और बोले

---

* जिन को सेंधिया कहते हैं और इस समय ग्वालियर का राज करते हैं (टीकावंशभास्कर)—पर यह सही नहीं है सुंधिया सेंधिया नहीं वह दूसरी जाति मालवे की ज़मींदारों में की है जो सोंधिया कह-लाती है और रयासत टोंक के परगने पिड़ावे और ग्वालियर राज के परगने आगरे वगैरह में रहती है। इस इलाके को 'सोंधिवाड़ा' कहते हैं।

कि इस बछड़े के दोनों कान कौन खा गया। तब भाइयों ने गूजरमल से प्रायश्चित्त करके पाप मिटाने को कहा पर उस ने हठ स नहीं माना तो सब उस को जातबाहर कर के चले गये।

गूजरमल एक मीने की बेटी से विवाह कर के मीना हो गया। पड़िहार मीने उस की औलाद में हैं जो खेराड़ देश में रहते हैं।

१८६ कुन्तल हमीर का बेटा बीरूटंकरनगर में रहा। उस ने लड़ कर राननगर * ले लिया और दुशमनों की जमीन दबा कर वहां अपनी राजधानी थापी, सावर और सरवाड़ के परगने भी दाब लिये। उस के २ बेटे बाघ और निम्मदेव हुये।

१८७ बाघ, बुढ़ापे में ईहड़देव चालुक्य की बेटी जयमती को व्याहा था। वह कुलटा थी उन दिनों गोठनपति † गूजर समय पा कर बहुत प्रबल हो गये थे। उन को एक बड़ा ख़ज़ाना मिला था जिस से खाने और खरचने में खूब माल उड़ाते थे। ये भोज वग़ैरह २४ भाई थे जो धन देने में किसी को नांह नहीं

---

* भिनाय का पुराना नाम या उस के पास कोई दूसरा ग्राम था (वंशभास्कर की टीका)।

† मारवाड़ में भी १ गांव इस नाम का है।

देते थे वह जयमती रानी भी उन के घर में जा घुसी थी। इस पर पड़िहारों और गूजरों में लड़ाई हुई। गूजर मारे गये, गोंठन जो उन का गांव था लूट गया।

१८८ भुद्ध—इस पर भोज के बेटे ऊदल ने बाप और चचाओं के बैर में चढ़ाई की, राननगर और सारा देश पड़िहारों से छूट गया—भुद्ध के दो बेटे जसराज, और सांवलदास हुये—सांवलदास का बेटा केशोदास था जिस की संतान केसोउत कहलाती है।

१८९ जसराज।

१९० नंद।

१९१ भीम—इस के दो बेटे किशनदास, और सोनपाल हुवे। सोनपाल के बेटे पोते सोनपालोत कहलाये।

१९२ किशनदास—इस ने पूर्व की धरती में जाकर उचहरा गढ़ बांधा।

१९३ श्यामसिंह।

१९४ मुकटमोहन।

१९५ कृपाल—इस कृपाल की २१ वीं पीढ़ी में बलभद्र * हुआ, जिस की दूसरी बेटी चंद्रभानु

---

* बलभद्र नागोद का राजा था – नागोद के राजों की पीढ़ियां जो

नाम बूंदी के राव राजा रामसिंह को व्याही थी।

१—पड़िहारों का वंशभेद।

१ पहरा—पंडहर से।

२ लुल्लरा—*लुल्लर से।

३ सूराउत—सूर से—सूराउत का दूसरा नाम मंडोवरा है।

४ बुदखेल—खिखि के बेटें बुद्ध से—जो पूर्व के देशों में बहुत हैं।

५ ईन्दा—सोधक के बेटे ईन्द से।

६ खुक्खरा—खुक्खर से।

७ चांदावत—चंद से ३ शाखायें हैं।

१ किलोया किल्ह से।

२ चंदरायणा चंद से।

३ चोहन्ना चुहन्न से।

८ धोराणा—मालदेव के पोते धोराण से।

६ धान्धिला—धार के बेटे धंधिल से।

१० सिंधुका—खीर के बेटे सिंधु से।

११ डोराना—डूंगर से।

१२ सुवराना—सुबर से।

१३ सुंधिया—दीपसिंह से।

१४ पड़िहार मीना—गूजरमल से।

---

* आगे लिखी जावेगी, वंशभास्कर की पीढ़ियों से नहीं मिलती हैं, वे भी पड़िहार हैं और मारवाड़ से ही अपना उधर जाना मानते हैं।

१५ केशवोत-केशोदास से।
१६ सोनपालोत-सोनपाल से।
ये १६ मुख्य भेद पड़िहारवंश के हैं।

गहलोतों से लड़ाइयाँ।

जिन दिनों मारवाड़ में पड़िहारों का राज खुब जमा हुआ था उस समय मेवाड़ के गहलोत राजा भी बढ़ चले थे। दोनों पड़ोसियों में कभी २ लड़ाई हो जाती थी। ऐसी लड़ाइयों में संभरराण और भोपतराण मंडोवर के राजाओं ने मेवाड़वालों को बारम्बार हराया और मनचाहा लाभ भी पाया, परन्तु अजराण के समय में उलटे लेने के देने पड़े क्योंकि चित्तौड़ के रावल तेजपाल ने २ वर्ष तक लड़भिड़ कर अजरान राणा को ऐसा दबाया कि उस ने अपनी बेटी पिंगला तेजपाल को दे कर सुलह कर ली, उस से रावल समरसिंह पैदा हुआ।

नाहरराज।

अजराज का बेटा नाहरराज पड़िहार राजाओं में सब से बढ़ कर नामी हुआ। उस ने संवत् ११०० में मंडोवर को फिर से बसाया था।

नाहर राव और पृथ्वीराज।

जब पृथ्वीराज चौहान ८ वर्ष के थे तो इन के

नाना अनंगपाल ने दिल्ली में बुला लिया । इन के नाना का इक़बाल बहुत बढ़ा हुआ था नागोर, लाहोर, और पिशोर वग़ैरह के राजा उन की सेवा करते थे। उन दिनों में मंडोवर के राजा पड़िहार नाहररांज भी दिल्ली में अनंगपाल के पास थे। जो कचहरी में पृथ्वीराज को देख कर प्रसन्न हुवे और अनंगपाल से उन की बहुत तारीफ़ की। पृथ्वीराज ने भी प्रसन्न हो कर नाहरराज को १ माला सोने की दी और अनंगपाल ने नाहरराज की बेटी से पृथ्वीराज का विवाह करने की बात चलाई, फिर पृथ्वीराज तो अजमेर में चले आये और नाहरराज मंडोवर को गये ।

कई दिनों पीछे पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर ने नाहरराज को कहलाया कि हम कुंवर पृथ्वीराज की शादी किया चाहते हैं सो तुम भी तैयारी करो। नाहरराज ने कहा कि मैंने लड़की देनी कब की थी यों ही कुछ बात दिल्ली में चली थी और तुम तो हमारी बराबरी के भी नहीं हो बेटी किस तरह दी जावे ।

पृथ्वीराज ने इस बात के सुनते ही बलात्कार बेटी लेना चाहा और सोमेश्वर जी के बरजते २ काका कन्ह, और अपने दूसरे साथियों को लेकर मंडोवर पर चढ़ाई करदी ।

नाहरराज ने खबर पाकर यह दाव खेला कि फ़ौज लेकर आप तो अनहलपाटण को चल दिये ४००० मीनों और मेरों को मारवाड़ और गुजरात के बीच की घाटियां रोकने को छोड़ गये।

पृथ्वीराज भी नाहरराज का पाटण जाना सुनकर रास्ते से उधर को ही लौट पड़े। मीनों और मेरों को मारते भगाते हुवे आगे बढ़े तब तो नाहरराज भी लड़ने को आये और १ बड़ी लड़ाई लड़ने के पीछे भाग कर अनहलपाटन के क़िले में घुस गये, जहां से उन्हों ने लड़की देने का संदेसा भेजा और पृथ्वीराज के मंजूर कर लेने पर मंडोवर में आकर पृथ्वीराज को बेटी व्याह दी।

हाड़ावंशप्रकाश से उत्पत्ति।

जब कलयुग के १००० वर्ष बीते तो बोद्धमत बहुत फैला। वेद के माननेवाले कम रह गये और दैत्य भी बढ़ गये तब वशिष्ठ जी ने बेदधर्म के बढ़ाने, बौद्धों और राक्षसों को दूर करने के लिये आबू पर यज्ञ कर के अग्निकुंड में से ४ राजपूतों को पैदा किया, १ पड़िहार २ सोलंखी ३ प्रमार ४ चौहान।

ये चारों ब्राह्मणों की मदद से बौद्धों को जगह २ हटा कर और बेद के धर्म को नये सिरे से जमा कर हिंदुस्तान में राज करने लगे।

पड़िहार ने मारवाड़ का १ विभाग जीत कर नोनागली नाम नगरी में राजधानी थापी।

सोलंखी ने गंगा के तट पर सोरूं नाम शहर में अपना दरबार लगाया।

'प्रमार ने मालवे में अपना राज जमाया।

चौहान ने दिल्ली में राज कर के मथुरा के जादवों को जीता, फिर पुष्कर के राजा विस्याश्व को जा घेरा। उस ने हार कर अपनी बेटी इंदुमती नाम चौहान को व्याह दी।

पड़िहार।

पड़िहार का बेटा जोधराज हुआ, उस के ५०० बेटों में से ४६६ तो शिकार और लड़ाई आदि में मारे गये और देवराज जो बच रहा था अपने भागबल से मारवाड़ का राजा हुआ। कुछ दिनों पीछे चौहान के बेटे महादेवराज ने दिल्ली से उस पर चढ़ाई की। देवराज महादेव का आधीन हो गया।

राना इंद्रजीत पड़िहार।

जब सांभर के चौहान राजा माणिक्यराज ने जो अपने मूलपुरुष से ११० वीं पीढ़ी में था, मारवाड़, पूर्व, पंजाब, और मालवे, में अपना राज बढ़ा कर विश्वपति की पदवी पाई तो उस समय पड़िहारों का राज महेसर (नर्वदाकिनारे) में था।

वहां के राजा इंद्रजीत ने जो पड़िहार की १४७ वीं पीढ़ी में था माणिक्यराज चौहान के पीछे मारवाड़ की कुछ धरती दबा ली थी जिस की संतान ने बढ़ते २ मारोटनगर में अपनी राजधानी थापी और सांभर के चौहान राजाओं से छेड़छाड़ की।

राजा मंगल पड़िहार।

मंगल पड़िहार ने आगे बढ़कर सांभर को जा घेरा। वहां का राजा रघुराम जो चौहान से १३२ वीं और माणिक्यराज से २२ वीं पीढ़ी में था ७ दिन तो उस से लड़ा और फिर रनवास को लेकर अपने ससुर राजा अर्जुन तंवर के पास बुरहानपुर में चला गया। मंगल ने सांभर लेली।

नाहर पड़िहार।

मंगल के पीछे उस का बेटा नाहर मारोट का राजा हुआ। उस के राज में रघुराम के बेटे समर सिंह ने अपना राज लेने के लिये बुरहानपुर से आकर सांभर के साहूकारों को पकड़ा और गायों को भी घेरा। नाहर यह खबर सुन कर लड़ने को गया, बड़ी लड़ाई हुई जिस में दोनों ही मारे गये।

समरसिंह का बेटा माणिक्यराज था, वह अपने बाप के मामा समरसिंह के बेटे जगंधर तंवर की मदद लाया और नाहर पड़िहार के १२ बेटों

को मार कर सांभर का मालिक हो गया। पड़िहारों के पास फिर भी मारवाड़ का बहुत सा राज रहा और वेही मारवाड़ के राजा कहलाते रहे।

हमीर पड़िहार और हालू हाडा।

बम्बावदे के राव हालू हाडा ने अपनी पगड़ी सिरोपाव में लोट नाम एक चरण को दे कर कह दिया था कि इसे बांधे हुवे किसी को सिर मत झुकाना। लोट उसी पगड़ी को बांधे हुए मंडोवर में गया। हमीर ने मिलने को बुलाया तो कहा कि मेरे सिर पर हालूहाडा की पगड़ी है और उस ने मुझे बरज दिया है सो मैं आ तो जाऊंगा मगर सिर झुका कर मुजरा नहीं करूंगा। हमीर ने पहले तो मंजूर कर के उसे बुला लिया मगर फिर पांचों कपड़े दे कर पहनने को कहा। लोट अपने डेरे में गया और अपने कपड़े उतार कर हमीर के दिये हुए कपड़े पहिन आया। पीछे से हमीर ने आदमी भेज कर लोट के नोकर से वह पगड़ी देखने के लिये मंगा ली और एक कुत्ते के सिर पर रख कर लोट को दिखाई। लोट नाराज़ हो कर बम्बावदे में गया और हालू से सारा हाल कहा। हालू ५०० राजपूत ले कर लड़ने को आया और हमीर को लड़ाई में हरा कर पकड़ लिया। मगर उस की मा ने बीच में पड़ कर सुलह करा दी और वैर दूर करने

के लिये हालू का व्याह अपने यहां कर देना चाहा। हालू ने कहा मैं तो बूढ़ा हो गया हूं मेरे भाई रुपाल को व्याह दो। उस ने कहा कि मैं व्याह करने को नहीं आया हूं मरने को आया हूं सो यहां मरूंगा क्योंकि अपनी ठुकरानी को जला कर आया हूं जो मेरे मारे जाने का यकीन कर के मेरे देखते २ सती हो गई है।

रुपाल को सब लोगों ने बहुत समझाया, जब उस ने नहीं माना तो यह बात ठहरी कि उस को अकेला लड़ कर मरने दिया जावे। उधर से भी एक पड़िहार लड़ने को आया और दोनों आपस में लड़ कर एक दूसरे के हाथ से मारे गये। फिर हालू अपने बाकी राजपूतों के व्याह पड़िहारों की बेटियों से कर के बरूबावदे में वापस आया और संबत् १४१० में मर गया।

जेसलमेर के इतिहास में पड़िहार।

जेसलमेर के इतिहास में जहां रानियों के नाम आये हैं वहां उन के वंश और बाप के नाम भी लिखे हैं, उन में से पड़िहार जाति की रानियों का विवरण यहां लिखा जाता है, परन्तु पहिले के इन ४ राजाओं के राज और देश का नाम नहीं है।

१ पड़िहार मधुसेन की बेटी—मथुरा के राजा रजकुमार की, जो आदि नारायण से ६७ वीं पीढ़ी में थे, १ ही रानी थी जिस से ४ बेटे—१ गजबाहू २भूमिजित ३तणवसेन और ४ वक्रसेनहुए।

२ पड़िहार राजा भोज की बेटी—भीमवती जादव राजा उदीपसिंह की रानी थी जो आदि-नारायण की ८०वीं पीढ़ी में थे।

३ पड़िहार सोमबुध की बेटी—रंभावती जादव राजा कीर्तिसेन को व्याही थी जो आदि नारायण से ८५ वीं पीढ़ी में थे, इन से ४ बेटे १ भगवानसेन २ करमसेन ३ कलूराज और ४ सहदेव हुये थे।

सिन्धुदेश के पड़िहार।

सिंध के पड़िहार राजाओं का पता भी जेसलमेर के इतिहास से उसी प्रसंग में लगा है, जिस का वर्णन ऊपर आचुका है। सिंध के पड़िहार राजा जाम कहलाते थे। इन में से इतने राजाओं के यहां जेसलमेर के रावलों के पूर्वजों का संबंध हुआ था।

१ पड़िहार राजा ऊढ़रा की बेटी लाहोर के जादव राजा भीमसेन की पटरानी थी जो आदि-नारायण से १०५ वीं पीढ़ी में थे।

२ पड़िहार राजा धवल की बेटी लाहोर

के जादव राजा गजूसेन को व्याही थी जो आदि नारायण से १४२ वीं पीढ़ी में थे और संवत् १५२ में हंसार के तख्त पर बैठे थे।

पड़िहारों से सिंधु देश छुटना।

लाहोर के जादव राजा बालंदजी, जो आदि-नारायण से १४५ वीं पीढ़ी में थे, संवत् २६१ में हंसार के तख्त पर बैठे। उन के १२ कुंवर हुए—उन में से दूसरे समाजी थे जिन्हों ने पड़िहारों को मारकर उन की जाम पदवी छीन ली और सिंधु-देश लेकर वहां समा नगर बसाया। उन की संतान जाडेचा कहलाती है जिस का राज अब कुछ भुज में है।

मंडोवर के पड़िहार राजा।

मंडोवर के इतने पड़िहार राजाओं की बेटियां भाटी राजाओं को व्यांही गई थीं—

१ राजा भीमदेव की बेटी हंसावती लाहौर के जादव राजा भट्टी जी को व्याही थी जो उन के साथ संवत् ३५२ में भटनेर में सती हुई। भट्टी जी आदि नारायण से १४६ वीं पीढ़ी में थे। इन की औलाद का तख्त पहिले भटनेर में था, अब जेसलमेर में है।

राजा भट्टी के परपोते सेतराव ने पड़िहारों

की मदद से पंजाब का सारा देश फतह कर के गजनी का गढ़ भी जीत लिया था।

२ पड़िहार सोमेश्वर की बेटी दीपकुंवरि भाटी-राजा गज्जू जी को व्याही थी जो संवत् ५२२ में लाहौर के तखत पर बैठे थे और सं० ५३५ में बुखारा के बादशाह से लड़ कर अपने कुंवर लोमण राव समेत काम आये। पंजाब इन से छूट गया। बाकी देश इन के पोते रावरेणसी ने टाकों, पड़िहारों, पंडीरों, बराहों और झालों * को बांट दिये। इसी गड़बड़ में मंडोवर का राज भी पड़िहारों से पंवारों ने ले लिया था।

गढ़जूना के पड़िहार।

ऐसा जाना जाता है कि मंडोर छूटे पीछे जो पंवारों ने लेली थी, पड़िहार गढ़जूने में राज करने लगे थे क्योंकि मंडोर के पीछे भाटियों के विवाह गढ़जूने की पड़िहार राजकुमारियों से हुए, लिखे हैं। जैसे—

१ राजा मुंजाब की बेटी भाटी राजारेणसी के पोते मंगलराव को व्याही थी जो संवत् ५७९ में

---

* जैसलमेर की तवारीख में दीवान महता नथमल जी ने लिखा है कि ये लोग बुखारा के बादशाह के पक्ष में हो गये थे इसलिये भाटियों के इतने देश बादशाह ने ही फतह पाने के पीछे इन को बांट दिये थे।

मूभाणगढ़ के राजा हुए थे, ये राजा भट्टी से १४वीं पीढ़ी में थे।

२ पड़िहार रानाजीवराज की बेटी भाटीराजा-विजयराव को व्याही थी जो संवत ८७७ में तणवट की गद्दी पर बैठे थे और जो भट्टी जी की २२ वीं पीढ़ी में थे।

फिर मंडोवर में पड़िहार।

भाटीराव बिजेराज के बेटे रावलदेवराज ने जो संवत् ६०६ से १०३० तक देरावर में राज कर रहे थे, पंवारों को मार कर उन के ६ कोट छीन लिये जिन में से १ कोट (गढ़) मंडोवर का पड़िहारों को दिया और फिर इन के इतने रानाओं की बेटियां भाटी राजाओं को व्याही गईं।

१ राना बीसल की बेटी जामकुंवरि भाटी रावलबाछू को व्याही थी, जो संवत् ११११ में लुद्रवे की गद्दी पर बैठे थे।

२ राना दूदा की बेटी कमलावती रावल करन को व्याही थी, जो संवत् १२६६ में जेसलमेर की गद्दी पर बैठ थे।

३ राना पातल की बेटी सूरजकुंवरि रावल मूल-राज को व्याही थी जो संवत् १३५० में जेसलमेर की गद्दी पर बैठे थे।

नागोद के पड़िहार।

जेसलमेर की तवारीख से जाना जाता है कि पड़िहार संवत् १२०० से पहिले नागोद में भी थे क्योंकि गढ़ नागोद के राव भाण की बेटी उदेकुंवर रावल जेसल जी की दूसरी रानी लिखी है। यह रावल जी संवत् १२०६ में लुद्रवे की गादी पर बैठे थे और इन्हों ने ही संवत् १२१६ में वर्तमान राजधानी जेसलमेर को बसाया है।

बेलवे के पड़िहार।

बेलवा मारवाड़ में १ कसबा है वहां ईंदा शाखा के पड़िहार रहते हैं। संवत् १३०० के पीछे तक ये पड़िहार ही कहलाते थे जैसा कि तवारीख जेसलमेर में लिखा है अर्थात् बेलवे के राना उदेराज की बेटी पहप कुंवरि रावल पुन्यपाल को जो संवत् १३३१ में जैसलमेर की गद्दी पर बैठे थे व्याही थी।

पड़िहारों की बात मूतानेणसी की मारवाड़ी ख्यात से—

मंडोर का कुछ हाल।

जोधपुर बसने से पहिले (मारवाड़) में आदू शहर मंडोवर था। उसे मंद्रोदर दैत्य ने सुमेरु परबत के बेटे भोमसेन पहाड़ (भोगशैल) में बसाया था। इस का बड़ा माहात्म्य है। मंदोदर की बेटी मंदोरी से व्याह करने के लिये लंका का राजा रावण मंडोवर में आया था रावण के व्याह की चंवरी का चिन्ह अब तक मौजूद है।

फिर मंडोवर में पंवारों का राज हुआ। पंवारों के पीछे पड़िहार मंडोवर के मालिक हुवे जिन में नागार्जुन का बेटा नाड़राव बड़ा रजपूत हुआ। उस का बनाया हुआ बहुत कमठा (इमारत) मंडोवर में है। नाड़राव की मंडोवर में बड़ीवार (बड़ी बादशाही) कहलाती है।

नाड़राव की पीढ़ियां।

१ राजा जसरथ	६ अजेपाल
२. भरथ	७ बड़ावेग
३ जीणबंध	८ नागार्जुन
४ विजपाल	६ नाड़राव
५ अजोधर	१० मोवणसी पृथ्वीराज चौहान का सामंत हुआ।

नाड़राव मंडोवर का धनी है। धनी धरती नाड़राव के पास है। चोहाणों में धनी सोमेश्वर का बेटा पृथ्वीराज है। नाड़राव की बेटी कंचनमाला की सगाई पृथ्वीराज से हुई थी फिर नाड़राव के मन में न जाने क्या आई जो उस ने कहा कि पृथ्वीराज को बेटी नहीं दूंगा। जो लोग सगाई करने गये थे उन्हों ने बहुत ही रोका और कहा कि यह बलाय ऐसी नहीं है दिया लेकर देख लो। नाड़राव ने कहा कि पृथ्वीराज में १० खोड़ (दोष) हैं इस को बेटी नहीं दूंगा। तब अदावत हो गई। पृथ्वीराज कंवरपदे में था तोभी अजमेर से चढ़ कर